शुतुरमुर्गी चरित्र का सच

डॉ. किशोर पंवार

कहावतें व मुहावरे हमारे सदियों के अनुभवों का निचोड़ होती हैं। इनमें से कुछ जो बारीक अवलोकनों से जन्मी हैं में वैज्ञानिक तथ्य भी छिपे रहते हैं; जैसे खरबूजे की तरह रंग बदलना, डर से पीला पड़ना और शर्म से लाल होना। लेकिन कभी-कभी इनमें चूक भी हो जाती है। ऐसी ही एक गलती 'शुतुरमुर्गी चरित्र' के साथ हुई है। इस कहावत का मतलब है - खतरे के समय शुतुरमुर्ग की तरह रेत में सिर छिपा लेना और समझना कि चूंकि अब मैं किसी को नहीं देख सकता तो मुझे कोई क्या देख पाएगा। यह विचार और इससे जुड़ा अवलोकन बहुत पुराना है। यह भ्रम सम्भवत: प्रसिद्ध प्रकृति वैज्ञानिक प्लिनी के समय से चला आ रहा है।

शायद प्लिनी ने अवलोकन में पर्याप्त सावधानी नहीं बरती जिससे ऐसी गड़बड़ हुई। प्लिनी ने देखा होगा कि घोंसले पर अपने अण्डों को सेने के लिए बैठा शुतुरमुर्ग किसी सम्भावित खतरे की प्रतिक्रिया स्वरूप अपना सिर नीचे झुका लेता है। ताकि झाड़ी से वह नज़र न आए। चूंकि उसका शरीर लगभग घास के रंग का होता है इसलिए वह आसपास के पर्यावरण में घुलमिल जाता है और आसानी से दिखाई नहीं देता है। यही देखकर प्लिनी ने यह बात कही होगी जो कालान्तर में एक कहावत बन गई।

जीवित पक्षियों में शुतुरमुर्ग शायद सबसे बड़े आकार की (लगभग ऊंट के बराबर) चिड़िया है जो हमारी कल्पना में फिट नहीं बैठती। हालांकि पक्षियों के प्रमुख गुण अर्थात उड़ने से तो यह वंचित है लेकिन अपनी शक्तिशाली, लम्बी टांगों से यह 60-65 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से सरपट दौड़ पाती है। आकार, रंग-रूप और दौड़ने के इस गुण के कारण इसे कैमल बर्ड भी कहा जाता है।

कुछ वर्षों पूर्व शुतुरमुर्ग लगभग सारे अफ्रीका में पाई जाती थीं। किन्तु अत्यधिक शिकार के चलते अब ये मध्य और दक्षिण अफ्रीका के पालनकेन्द्रों में ही प्रमुखता से मिलती हैं। यहां इन्हें इनके सुन्दर पंखों के लिए पाला जाता है। नर के पंख बहुरंगी व लुभावने होते हैं जबकि मादा भूरे पंखों के कारण सूखी झाड़ी जैसी दिखती है। घास के मैदानों में छिपने पर इसे आसानी से पहचाना नहीं जा सकता। अपने पर्यावरण के प्रति यह एक तरह का अनुकूलन है।

शुतुरमुर्ग एक बहुसंगिनी चिड़िया है अर्थात इसका नर कई मादाओं के साथ जोड़ा बनाता है। भव्य प्रणय प्रदर्शन क्रियाओं के बाद समागम होता है। नर घोंसला बनाता है जो 30 से.मी. गहरा रेत का एक बड़ा सा गड्ढा होता है। इसमें टहनियां बेतरतीब-सी पड़ी होती हैं। नर मादा दोनों मिलकर अण्डों को सेते हैं। अण्डा लगभग नारियल के आकार का होता है। मुर्गी के अण्डे से तुलना की जाए तो 24 मुर्गी के अण्डों के बराबर इसका एक अण्डा बैठता है। अफ्रीका के आदिवासी लगभग सवा किलो वज़न वाले इस अण्डे के मोटे व कड़े खोल का उपयोग पानी भरने के बरतन के रूप में करते हैं। अण्डों से 42-45 दिन बाद मुर्गी के आकार के चूज़े निकलते हैं।

इसके भोजन में फल, अनाज, पत्तियां, कीड़े, घोंघे व छिपकलियां शामिल हैं। इन्हें पीसने के लिए यह यदा कदा कंकड़ पत्थर भी निगलता रहता है। इसकी इस आदत के कारण एक अन्य भ्रम यह भी है कि यह कुछ भी अपचनशील पदार्थ खा लेता है। कील, धातु, कांच से लेकर रेल की पटरियां तक। यह पूर्णत: अतिश्योक्ति है। हालांकि यह सच है कि अन्य पक्षियों की तरह इसके भी दांत नहीं होते जिससे यह अपना भोजन चबाए बिना निगल लेता है। इस अचबे खाने को पचाने के लिए उसे बारीक पीसना ज़रूरी है। इसलिए यह कंकड़-पत्थर खाता है परन्तु रेल की पटरियां नहीं। हालांकि बन्दी अवस्था में इसके पेट में पत्थर की जगह कुछ धातुई सामग्री देखी गई है।

शत्रु को देखकर रेत में सिर छिपाने का किताबी वर्णन इसके चरित्र से बिल्कुल मेल नहीं खाता। सच तो यह है

अण्डों की रखवाली करता शुतुरमुर्ग

कि संकट में यह अपने दुश्मनों को ऐसी दुलत्ती मारता है कि गधे भी मात खा जाएं। सुरक्षा के लिए यह अपनी मज़बूत चोंच से काटता भी है। परन्तु इसका प्रमुख सुरक्षा साधन तो इसकी दो मज़बूत, लम्बी और जानदार टांगें ही हैं।

शुतुरमुर्ग के प्रजनन व्यवहार पर ब्रायन बरट्राम द्वारा किए गए अवलोकनों ने पुरातन अवधारणाओं को गलत सिद्ध कर दिया है। बरट्राम ने पूर्वी अफ्रीका में शुतुरमुर्ग के घोंसलों एवं अण्डों का बड़ी बारीकी से अध्ययन किया। उसने पाया कि नर शुतुरमुर्ग घोंसले का निर्माण करता है जिसका इस्तेमाल कई मादाएं सामूहिक रूप से करती हैं। शुरुआत में नर घोंसला बनाने के बाद एक मादा शुतुरमुर्ग से जोड़ा बांधता है जो मुख्य मुर्गी (मेजर हेन) कहलाती है। यह अपने अण्डे सबसे पहले इस घोंसले में देती है। कुछ दिनों पश्चात् अन्य मादा शुतुरमुर्ग (छोटी मुर्गियां या माइनर हेन) भी अपने अण्डे इसी घोंसले में देती हैं। हो सकता है इन्होंने भी इसी नर से जोड़ा बांधा हो। मुख्य मुर्गी इस घोंसले में छोटी मुर्गियों को अण्डे देने देती है। हालांकि सभी अण्डों का उष्मायन और रक्षा बड़ी मुर्गी ही करती है। यह किस्सा कोयल जैसा ही है परन्तु वहां एक जाति का पक्षी अपने अण्डे दूसरी जाति के घोंसले में देता है।

इस तरह मुख्य मुर्गी के घोंसले में अण्डों की संख्या लगभग 40 तक हो जाती है जो उसकी उष्मायन क्षमता से कहीं ज़्यादा है। अतः वह लगभग 20 अण्डे घोंसले के केन्द्र में रखती है और बाकी को बाहर की ओर धकेल कर एक बाहरी घेरा बना लेती है।

बरट्राम को यह जानकारी थी कि बाहरी घेरे में रखे अण्डों से केन्द्र में रखे अण्डों की सुरक्षा होती है। शायद इसी वजह से मुख्य मुर्गी छोटी मुर्गियों को अपने घोंसले में अण्डे देने देती है। पूर्व में स्थानीय लोगों का मत था कि जंगल में आग लगने की स्थिति में सबसे पहले बाहरी घेरे में रखे अण्डे फूटते हैं जिससे निकले द्रव से केन्द्र में रखे अण्डे आग के नुकसान से बच जाते हैं।

अन्य खोजियों की परिकल्पना थी कि बाहरी घेरे के अण्डे अन्दरूनी घेरे में रखे अण्डों का ताप नियंत्रण करने में मदद करते हैं। दोनों परिकल्पनाओं की सच्चाई जानने हेतु बरट्राम ने तीन मादा शुतुरमुर्गियों के घोंसलों का बड़ी सावधानी से अध्ययन किया। उनका यह शोध 'शुतुरमुर्ग अपने अण्डों को पहचानता है और दूसरों के अण्डों को हटाता है' के नाम से 1979 में *नेचर* में छपा था।

बरट्राम ने घोंसले में रखे हरेक अण्डों की नापजोख की, उन्हें नम्बर दिया और 'समय अन्तराल चित्रण' के ज़रिए यह भी पता लगाया कि मुख्य मुर्गी के अण्डे कौन से हैं और छोटी मुर्गियों के कौन से। अपने अध्ययन से उसने सिद्ध किया कि मुख्य मुर्गी अपने अण्डों को

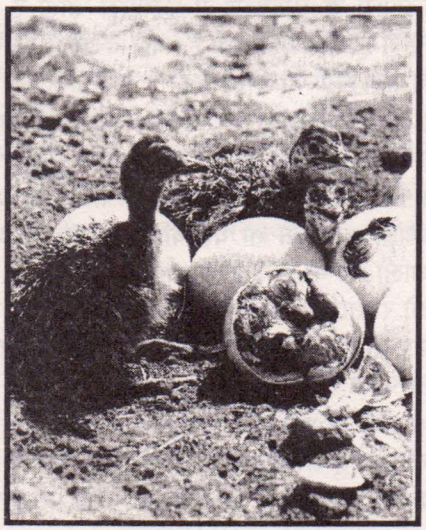

पहचानती है और छोटी मुर्गियों द्वारा अपने घोंसले में दिए अण्डों को बाहरी घेरे में रखती है। जैकाल और गिद्ध जैसे शिकारी शुतुरमुर्ग के अण्डों के दुश्मन हैं और इन्हें खाने के लिए घोंसले पर आक्रमण करते हैं। इस हेतु वे बाहरी घेरे में रखे कुछ अण्डों को ही चुनते हैं। इस तरह मुख्य मुर्गी अपने अण्डों को शिकारियों से बचाती है।

तालिका1 : शुतुरमुर्ग के घोंसलों में अण्डों की स्थिति

अण्डे	केन्द्र में अण्डों की संख्या (जिनका उष्मायन किया जाता है)	बाहरी घेरे में अण्डे (अभागे अण्डे)
घोंसला - क		
मुख्य मुर्गी के अण्डे	9	0
छोटी मुर्गी के अण्डे	10	8
घोंसला - ख		
मुख्य मुर्गी के अण्डे	13	0
छोटी मुर्गी के अण्डे	6	5
घोंसला - ग		
मुख्य मुर्गी के अण्डे	9	1
छोटी मुर्गी के अण्डे	9	10

बरट्राम के इन अवलोकनों से पूर्व की कोई भी परिकल्पना सिद्ध न हो पाई। अत: बरट्राम ने एक नई परिकल्पना प्रस्तुत की। तालिका 1 से स्पष्ट है कि केन्द्र में रखे अन्य मुर्गी के अण्डों का भी उष्मायन मुख्य मुर्गी करती है जिससे विकसित होकर चूज़े निकलते हैं।

ज़रा सोचिए कि यदि मुख्य मुर्गी छोटी मुर्गियों के कुछ अण्डों को भी केन्द्र में रखकर न सेती तो उनसे चूजे नहीं निकलते और कालान्तर में वे मुख्य मुर्गी के घोंसले में अपने अण्डे देना छोड़ ही देतीं। यह रिश्ता आज भी कायम है क्योंकि इसमें दोनों का ही फायदा हो रहा है। जहां बड़ी मुर्गी के अधिकांश अण्डों की सुरक्षा हो जाती है तो वहीं छोटी मुर्गियों के कुछ अण्डों का उष्मायन बिना स्वयं परेशानी व खतरा उठाए हो जाता है। अत: मुख्यमुर्गी के लिए अपने अण्डों की सुरक्षा के बदले दूसरों के अण्डे सेना कोई घाटे का सौदा नहीं है। *(स्रोत फीचर्स)*

अण्डों को अपने पंखों तले छिपाए एक मादा शुतुरमुर्ग